© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 01 | March – April 2015

प्रेमचंद की दलित कहानियां एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

जागृति, शोध छात्रा (हिन्दी)
चाणक्यपुरी, अहियापुर, पोस्ट- उमानगर, मुजफ्फरपुर |

सार

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य की अनमोल निधि हैं। उन्हें उपन्यास सम्राट', 'कलम का जादूगर' व 'कलम का मजदूर' आदि उपाधियों से विभूषित किया गया है। उन्होंने तीन सौ से भी अधिक कहानियों की रचना की है। उनकी कहानियों में तत्कालीन समाज की परिस्थितियों का अत्यंत ही मार्मिक व यथार्थ वर्णन मिलता है। उन्होंने समाज के हर प्रकार के शोषित वर्ग की समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। उन्होंने किसानों, मजदूरों, दलितों व स्त्रियों के उत्पीड़न व कुंठा को अभिव्यक्ति प्रदान की। समाज की प्रमुख समस्याओं में से मानव की संकीर्ण मानसिकता व निर्दयता का परिचय देती है- जातिवाद की समस्या। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में अछूत व दलित समझे जाने वाले वर्ग की दयनीय स्थिति का सजीव चित्रण किया है। उनके द्वारा लिखित ठाकुर का कुआँ, मंदिर, मंत्र, सदृगति, कफन, घासवाली, सौभाग्य के कोड़े, व विध्वंस आदि कहानियाँ दलित समाज के शोषण, दुख व पीड़ा को प्रदर्शित करती हैं।

9 772278 684800 03
© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

मुख्य शब्द : दलित, कहानियां ,समाजशास्त्रीय, परिस्थितियों इत्यादि ।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द्र दलित जीवन को हिन्दी साहित्य के केंद्र में लाने वाले पहले लेखक थे। उनका कथा और विचार साहित्य हिन्दी क्षेत्र के दलित जीवन की त्रासदी का प्रामाणिक आकलन है। छूत-अछूत और दलित समस्या पर जिस गहरी संवेदना से प्रेमचन्द ने लिखा है, किसी और ने नहीं। प्रेमचन्द के सामने यह बात बिल्कुल साफ थी कि यह समस्या मूलतः: हिन्दू समाज की समस्या है। प्रेमचन्द हिन्दू समाज की इस विडम्बना से बहुत आहत थे कि यह समाज जिसे अपना भाई कहता है, उसी के साथ ऐसा दुर्व्यवहार करता है कि मनुष्यता सिहर उठती है। उनके लिए यह चिंता का विषय था कि यह कैसा समाज है, जो मनुष्य को उसके गुणों-अवगुणों से नहीं, बल्कि उसकी जाति से देखता है। उन्हें इस बात

को लेकर कोई भ्रम नहीं था कि यह पतनशील प्रवृति सिर्फ हिन्दू समाज के लिए नहीं बल्कि भारतीय समाज के लिए भी अत्यन्त घातक है। प्रेमचन्द एक सच्चे व सचेत द्रष्टा की भार्ति वह तत्कालीन समाज में दलितों की स्थिति को निरन्तर देख रहे थे और दुःखी और आक्रोशित हो रहे थे। शायद यही कारण है कि निरन्तर वह अपने लेखों में इस विषय पर लिख रहे थे और अपने साहित्य में भी प्रेमचन्द ने इस वर्ग को बहुत स्थान दिया है। प्रेमचन्द्र के उपलब्ध कथा साहित्य में उनकी कहानी सद्गति' दलित पर ही केन्द्रित है। सदुगति' कहानी में दुखी नामक चमार को अपनी लड़की की सगाई का महूर्त निकलवाता है वह पण्डित घासीराम को अपने घर बुलाने की करता है। जब उनके बैठने पर विचार होता है तो दुखी की पत्नी झुरिया कहती है कि ठक्राने से खटिया मंगा लेंगे। इस पर दुखी कहता है कि तू तो कभी-कभी ऐसी बात करती है कि देह जल जाती है। ठक्राने वाले हमें खटिया देंगे। आग तक तो घर से निकलती नहीं, खटिया देंगे। कैथाने में जाकर एक लोटा पानी मांग लूं तो न मिले। मला खटिया देंगे। तू अपनी खटोली धोकर रख दे।' झुरिया कहती है, 'वह हमारी खटोली पर बैठेंगे। देखते नहीं कितने नेम-घरम से रहते है। दुखी, 'हां यह बात तो है। महुए के पत्ते तोड़कर एक पत्तल बना लूं तो ठीक हो जाए। पत्तल में बड़े-बड़े आदमी खाते हैं। वह पवित्तर है।'

प्रेमचन्दर की 'मंदिर' कहानी को कँवल भारती दलित चेतना की कहानी नहीं मानते हैं। यह कहानी उस समय लिखी गयी थी, जब भारत में दलितों के मंदिर प्रवेश का आन्दोलन चल रहा था। दलितों के मंदिर-प्रवेश के पक्ष में सवर्णों की मानसिकता बदलने में 'मंदिर' ने भले ही कोई भूमिका न निभाई हो, पर इससे प्रेमचन्द की दलितों के मंदिर-प्रवेश की भावना का जरूर पता चलता है, किन्तु कँवल भारती जी का इस कहानी के प्रति दृष्टिकोण भिन्न है उनका मानना है-“इस कहानी में सुखिया का दुःखद अन्त हुआ है, जो द्रवित तो करता है पर प्रभावित नहीं करता। काश प्रेमचन्दर दिखाते कि पुजारी का हृदय परिवर्तन हुआ और सुखिया मन्दिर में प्रवेश कर जाती है, तो यह दिलतों के मन्दिर प्रवेश की समस्या पर एक सार्थक कहानी बन सकती थी। काश, प्रेमचन्द मंदिर और ईश्वर में सुखिया की आस्था को तोड़ देते तो यह कहानी दलित मुक्ति की कहानी बन जाती। दलितों के मन्दिर प्रवेश के लिए डॉ०अम्बेडकर ने भी सत्याग्रह किया था। पर इसलिए नहीं कि मंदिर में उनकी आस्था थी या वह दलितों में यह चेतना जगाना चाहते थे कि मंदिर के भगवान उनके कष्टो को दूर कर देंगे, वरन्

डॉ० अम्बेडकर ने सत्याग्रह इसलिए किया था, क्योंकि मंदिर प्रवेश मानवाधिकार का प्रश्न था। जब सवर्ण मंदिर में जा सकते हैं तो अछूत क्यों नहीं जा सकते? 'मंदिर' में प्रेमचन्दर की यह सोच कहीं नजर नहीं आती है" |

जातिगत भेदभाव की उत्पत्ति

वेद व पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों में जाति तथा वर्ण भेद की उत्पत्ति के साक्ष्य मिलते हैं। कहीं पर इसका आरम्भ ब्रह्म के विभिन्न अंगों से उत्पन्न होना बताया गया है तो कहीं पर मानव के व्यवसाय को इसका आधार माना गया है। प्राचीन समय में इस जाति भेद का कारण जो भी रहा हो किंतु वर्तमान समय में जाति का निर्धारण जन्म के आधार पर किया जाता है। अगर कोई मनुष्य स्वर्ण जाति में उत्पन्न होता है तो उसे पवित्र माना जाता है और इसके विपरित निम्न जाति में पैदा होने वाले मानव को अछूत व दलित समझा जाता है। यह हमारे देश की धार्मिक विडम्बंना है कि एक तरफ तो ये माना जाता है कि संपूर्ण सृष्टि की रचना ईश्वर ने की है। वहीं दूसरी तरफ उसी ईश्वर की रचना में धर्म के नाम पर भेदभाव किया जाता है। प्रेमचंद ने प्रति समाज के इस निकृष्ट दृष्टिकोण को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है।

दलित पुरूष और स्त्रियों का शोषण व उत्पीड़न

परिवार के आर्थिक जीवनयापन का आधार पुरूष को माना जाता है। पुरूष धन कमाकर लाता है व स्त्री उस धन से भोजन बनाकर अपने परिवार का पालन-पोषण करती है। धीरे-धीरे इस सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आ रहा है। स्त्री भी अब हर प्रकार के व्यवसाय में अपनी पहचान बना चुकी है। परंतु हमारे देश में व्यापक स्तर पर अभी भी यही व्यवस्था सर्वमान्य है। दलित व अछूत माने जाने वाले परूषों को आर्थिक रूप से निम्न वर्ग पर निर्भर रहना पड़ा है। उन्हें धर्म के दांव-पेंच में इस प्रकार फंसा दिया गया कि वे अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठने की कल्पना भी ना कर सकें। उन्हें केवल साफ-सफाई, मजदूरी व जमींदार के खेतों की देखभाल जैसे निम्न श्रेणी के कार्यों तक ही सीमित रखा गया। उन्हें इस हद तक प्रताड़ित किया गया कि वे अपनी अंतरात्मा से स्वंय को दीन-हीन व तुच्छ मान लें। उनके स्वामिमान रूपी बीज को इतना गला दिया गया कि वह कभी प्रस्कुटित ही ना हो सके। 'सद्गति' कहानी का अछुत पात्र दुखी अपनी बेटी की सगाई के शुभ शगुन के लिए पंडित घासी राम को बुलाने के लिए जाता है। पंडित साथ चलने के बदले उससे झाड़ू लगाने, गोबर लेपने, भूसा

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 01 | March – April 2015

लाने व लकड़ी काटने के लिए कहता है। वह बेचारा दिनमन भूखे पेट ये सारे काम निपटाने की कोशिश करता है। जब वह थककर चूर हो जाता है तो वह चिल्लम जलाने के लिए आग मांगने पंडित के द्वार पर चला जाता है। पंडिताइन एक अछूत के द्वारा घर अशुद्ध किये जाने पर पंडित को खरी-खोटी सुनाते हए कहती है, "तुम्हें तो जैसे पोथी-पत्रों के फेर में धरम-करम किसी बात की सुधि ही नहीं रही। चमार हो, धोबी हो, पासी हो मुँह उठाये घर में चला आये। हिन्दू का घर ना हुआ, कोई सराये हुई।" वह बेचारा ये सब बातें चना व्यय वी आए बा को वार जगा है मानी चहजे कोई महाम्पराध हो गया हो। बह विनम्र होकर पंडिताइन से कहता है-"पंडिताइन माता, मुझसे बड़ी भूल हई कि घर में चला आया। चमार की अक्ल ही तो ठहरी। इतने मूरख ना होते, तो लात क्यों खाते" कहानी के अंत में वह बेचारा लकड़ी -काटते मर जाता है और उसकी लाश को खेत में फेंक जाता है। इससे साफ प्रदर्शित होता है कि पिछड़े व अछूत वर्ग को कितनी अमानवीयता व निर्दयता से प्रताड़ित किया गया। उनके अंदर स्वामिमान के भाव के स्थान पर दीनता का भाव भर दिया गया।

उपसंहार

मानव-मन की जितनी भावनाएं हैं, जितनी विचारधाराएं हैं, जितने इृष्टिकोण हैं, उन सभी को लेकर मुंशी प्रेमचंद ने कहानियां लिखी हैं। उनकी कहानियां वैविध्यपूर्ण हैं।प्रेमचंद ने हमेशा समाज का हित चाहा। इस कारण उनकी कहानियों में विलक्षण आशावाद और अमिट विश्वास देखा जा सकता है। हिन्दी में दलितवादी साहित्यिक चिंतन प्रेमचंद से शुरू हुआ। प्रेमचंद अपने समय के ऐसे ल्लेखक थे, जिन्होंने हिल्दू समाज में व्याप्त भेदभाव की कड़ी आलोचना की। सर्वप्रथम उन्होंने ही साहित्य की दुनिया में दलितों को शीर्ष आसन पर बैठाने का जोखिम उठाया और आजीवन जाति, वर्ण, धर्म, संप्रदाय आदि संकीर्णताओं के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने गहरी संवेदनशीलता के साथ दलितों के जीवन में समाहित अंतरालों को भरने हेतु संघर्ष करते हुए उनकी शक्ति पर असीम आस्था व्यक्त की। इस प्रकार अपने समय और समाज में प्रेमचंद दलित समस्या के सबसे अधिक प्रतिबद्ध प्रत्यक्ष नायक बनकर सामने आए। प्रेमचंद द्वारा रचित साहित्य में दलित संबंधी स्थितियों का वर्णन मिलता है। प्रेमचंद एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने पहली बार भारत में नारकीय यातनाएं भोगते दलितों को अपनी कहानियों का विषय बनाया। दलित समस्या को उजागर करने वाली कहानियां लिखीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

[1] प्रेमचंद, ठाकुर का कुआं, से. कथायात्रा, डा.आलोक गुल, पृष्ठ 82

[2] प्रेमचंद, ठाकुर का कुआं, सं. कथायात्रा, ड.आलोक गुद्ता,

[3] प्रेमचंद, ठाकुर का कुआं, से. कथायात्रा, ड.आलोक गुझ्ता, पृष्ठ 0

[4] प्रेमचंद, कफन, सं. कथा द्वादपी, डा.विनीत गोस्वाओ,

[5] प्रो.मंवरलाल गुर्जर, प्रो-आर.सी.पटेल पृष्ठ 30

[6] प्रेमचंद, सामाजिक क्रांति के दस्तावेज भाग-त, सं. शंभूनाथ, पृष्ठ 527

[7] डा.अम्बेडकर: सामाजिक क्रांति के दस्तावेज आग-2, सं. शंभूनाथ, पृष्ठ 39

[8] डा.अम्बेडकर: सामाजिक क्रांति के दस्तावेज भाग-, सं. शंभूनाथ, पृष्ठ 549